रिकॉर्ड :– ना वो हमसे जुदा..... ''ऊँ'' पिताश्री 27/10/1965
ओम् शान्ति। बच्चों को बाप बैठकर समझाते हैं अच्छी तरह से। कौन–सा बाप? पारलौकिक बाप। लौकिक बाप के तो इतने बच्चे नहीं होते। पारलौकिक बाप के इतने बच्चे आत्माएँ हैं, जो याद करते रहते हैं– हे पतित–पावन, सद्गति दाता, ओ प०पि०प०। तो पिता कह करके पुकारते हैं। तो प०पि०प० निराकार भगवानुवाच्य। निराकार परमात्मा तो एक होता है ना। दो नहीं होते। बच्चों की बुद्धि में बैठा है ऊँचे ते ऊँचा भगवत है। वो कहाँ रहता है? जहाँ आत्माएँ रहती हैं। ईश्वर, प्रभु, भगवान कहने से सुख का वर्सा लेने की बात नहीं आती। बाप कहने से वर्सा याद आता है; परन्तु मनुष्य बाप को जानते नहीं। भारतवासी अपनी दुर्गति करते हैं ड्रामा अनुसार रावण मत पर, जो गीता में भगवान के बदले कृष्ण का नाम ठोक दिया है। कृष्ण तो पतित–पावन, सद्गति दाता हो ना सके। जब तक कोई को यह पता ना पड़ा है कि बाप निराकार है और गीता का भगवान निराकार है, जब तक यह ना समझे तब तक दुर्गति में ही हैं। यह तो बहुत बड़ी भूल है। बाबा तो बहुत समझाते रहते हैं; परन्तु बच्चों की बुद्धि में अब तक ना बैठा है कि पहले–2 यह समझाना है कि ब्र०वि०शं० सूक्ष्म देहधारी हैं, मनुष्य स्थूल देहधारी हैं; परन्तु स्थूल और सूक्ष्म देहधारी को बाप नहीं कहा जाता। बाप निराकार प०पि०प० को कहा जाता है। भला भूल क्या हुई है जो दुर्गति हुई है? गीता सुनाते आते हैं और दुर्गति को पाते आते हैं। बाप से सच्ची गीता सुनने से सद्गति मिल सकती है। झूठी गीता सुनते–2 तो झूठे बनते गए हैं। तो कोई भी आवे तो पहले–2 बाप का परिचय देना है। यह है मूल बात; परन्तु बच्चों की बुद्धि में ठीक तरह नहीं बैठा। तभी बाबा ने पोस्टर भी छपवाया है कि गीता का भगवान कृष्ण बच्चा है या प०पि०प०; परन्तु पोस्टर छपाने यह भी किसी की बुद्धि में नहीं आया; परन्तु बुद्धि में यह आना चाहिए कि यह पोस्टर सभी भाषा में छपावें। शिव और कृष्ण का चित्र भी डालो; क्योंकि यह है मूल बात। जब तक यह बुद्धि में ना बैठे तब तक चाहे गीता दो, चाहे मैगजीन दो वा योग का किताब दो तब तक धूड़ भी नहीं समझेंगे। वास्तव में सन्यासियों को गीता पढ़ने का अधिकार नहीं है। वह देवता धर्म के हैं ही नहीं। गीता किस धर्म का शास्त्र है? (किसी ने ब्राह्मण, किसी ने देवता, किसी ने दोनों धर्म का बताया) ब्राह्मण देवी–देवता धर्म का शास्त्र कहना ठीक है। जैसे बाइबल क्रिश्चियन धर्म का शास्त्र है। तो गीता को सिर्फ देवता धर्म का शास्त्र नहीं कहेंगे। जब तक ब्रह्म... को ना मिलाय। कहते हैं ना ब्राह्मण देवी–देवता नमः। बाबा ने बताया है कि देवताओं में ज्ञान है नहीं और वह यह भी नहीं जानते कि गीता कोई हमारे धर्म का शास्त्र है। ज्ञान है ब्राह्मणों को। सिर्फ ब्राह्मण धर्म का भी शास्त्र गीता नहीं कहेंगे; क्योंकि बाप दोनों धर्म स्थापन करते हैं। इसलिए दोनों धर्म का शास्त्र कहेंगे। तीसरा क्षत्रिय धर्म इसमें आ ही गया। वह तो कह देते हिन्दू धर्म का शास्त्र है। आर्या का भी कह देते। आर्या समाज तो कल दयानन्द से स्थापन हुआ है। भले ही नया धर्म है; परन्तु अभी तो अनआर्या बन गए हैं। यह देवी–देवता धर्म के तो हैं नहीं। तो मूल बात बतानी है कि गीता का भगवान कौन? गीता में कृष्ण का नाम डाल गीता को कलंकित कर दिया है। इसलिए ही बाबा ने पोस्टर छपवाय हैं। जब तक मैगजीन में यह मूल बात ना है तब तक मैगजीन भी वर्थ नोट पैनी है। बाकी तीक–2 है तो कोई समझ ना सके; क्योंकि मेरे से बुद्धियोग टूट गया है झूठी गीता सुनने से। पोस्टर पर शिवबाबा की महिमा और कृष्ण की महिमा लिखनी है और जहाँ रचयिता अक्षर लिखा है वहाँ शिव का और जहाँ रचना अक्षर लिखा है वहाँ कृष्ण का चित्र दे देना है। यह तो पोस्टर बड़ा है। छोटा भी बना सकते हैं। ..... प्रिंटिंग पर भी बन रहे हैं। कई–2 तो 10–15 भी माथा खपाते हैं। लिखकर भी आते हैं कि शिवबाबा है; परन्तु अन्दर में नहीं बैठता तो जैसे कि उल्लू के उल्लू हैं और लिख देना चाहिए कि हरेक को अपना–2 धर्मशास्त्र पढ़ना चाहिए। भारतवासी तो बिल्कुल व्यभिचारी हैं; क्योंकि अपने धर्मशास्त्र को ना जान और–2 शास्त्र पढ़ते रहते हैं। गीता पाठशाला और ल०ना० का मंदिर बहुत बनाते रहते हैं। ल०ना० और

राधे–कृष्ण का क्या संबंध है यह नहीं जानते; क्योंकि (माया) ने बंदर बुद्धि, पत्थर बुद्धि बना दिया है। बन्दर भला बाप को क्या जानेंगे! मनुष्य ही जानेंगे ना! तो बाप को नहीं जानते तो निधनके हो गए ना। विद्वान–आचार्य श्री–2 108 जगत्गुरु सब ऑर्फन हैं। ऑर्फन तो धक्के ही खाते रहते हैं ना। तो पहले–2 यह सिद्ध करना है कि गीता का भगवान कौन? गीता में अभी देखो बातें कितनी बनाई हैं और गीता पाठशाला का मान कितना है। तो अभी देवता और ब्राह्मण धर्म प्रायःलोप है तभी भक्तिमार्ग वाले कहते हैं ब्राह्मण देवी–देवता नमः। उनको यह मालूम नहीं है कि ब्राह्मण ही देवता कैसे बने। तो कौन बतावे? बाप कहते हैं कि मैं ब्रह्मा मुखवंशावली बनाय देवता बनाता हूँ। तो गीता हो गया ब्राह्मण देवी–देवता धर्म का शास्त्र। सिर्फ कहें देवता धर्म का तो ल०ना० में तो ज्ञान है नहीं। तो यह बातें समझने की हैं। भला कौन समझावे? शिवबाबा सुनाते हैं। रुद्र यज्ञ मशहूर है। रुद्र यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है। कहाँ रुद्र यज्ञ, कहाँ कृष्ण तो कितना फर्क है। अभी इस ज्ञान यज्ञ बाद फिर सतयुग में कोई मैटीरियल यज्ञ रचा नहीं जाता। अभी भी यह मैटीरियल यज्ञ रचते हैं आफत को मिटाने लिए। वहाँ कोई आफत है ही नहीं जो यज्ञ रचा जाए। गीता में रुद्र यज्ञ का भी लिखा है और यह भी लिखा है भगवानुवाच्य। तो गीता में आटे में लून जितना सच है। बाकी सब है झूठ। तो यह विचार–सागर–मंथन करना है। विचार–सागर–मंथन शिवबाबा तो नहीं करेगा ना। ब्रह्मा और बी०के० को ही करना है। तो जब तक अल्फ ना सिखाया है तो जास्ती तीक–2 करना ठीक नहीं; परन्तु कोई ने लिखा नहीं है कि हमने यह समझाया, उसने यह लिखकर दिया और लिखत भेज रहे हैं, तो बाबा भी उनको लिखेगा कि ऐसे–2 समझाओ। आज तो जितना गीता पढ़ते जाते, पापात्मा बनते जाते हैं ना। महान आत्मा, पाप आत्मा कहा जाता। महान परमात्मा नहीं कहा जाता। इस समय महान आत्मा तो कोई है नहीं। सब पतित हैं; क्योंकि झूठी गीता पढ़ते हैं। गीता के भगवान का नाम बदलना तो बहुत बड़ा पाप है। पति के बदली बच्चे का नाम देना तो बड़ा पाप हो गया ना। मनुष्य बिचारे एकदम दुबन में फँसे हुए हैं। दुबन में(से) निकालने में बड़ी मेहनत लगती है। भक्ति की दुबन में एकदम फँस मरे हैं। ..... तो बाप को पुकारते हैं। तो बाप कहते हैं तुमको 5 विकार रावण पर जीत पहनाते हैं। फिर सतयुग में तुम जीव आत्मा सुख में हो।

जो भी सतसंग हैं वहाँ जाए तुम पूछ सकते हो। डरने की तो कोई बात है नहीं। कि गीता पर कृष्ण का नाम डालने से दुर्गति को पाए हो। जब तक अल्फ को ना समझो तब तक दुर्गति को पाय रहोगे। सद्गति को पा ही नहीं सकोगे। अंधकार में तो पड़े हैं। मौत तो सामने खड़ा है और कहते हैं कलियुग में अभी 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। तो इसको कहा जाता घोर अंधियारा। कुंभकरण की नींद में पड़े हैं। दुबन में किसने फँसाया? इन भक्ति ने। भक्ति कलट अर्थात ..... तो समझाना चाहिए; परन्तु पता नहीं बच्चे मेहनत क्यों नहीं करते। पोस्टर लाखों ..... छपाना चाहिए। कहते हैं भक्ति का फल देने भगवान आता है। क्यों आता है? सद्गति करने। तो दुर्गति में हैं ना। तो भक्ति हो गई दुर्गति। गीता में अगर निराकार शिव का नाम होता तो सब उसको मानते। बरोबर निराकार ने राजयोग सिखाया था। युद्ध के मैदान की तो कोई बात नहीं। युद्ध के मैदान में इतना ज्ञान कैसे देंगे, राजयोग कैसे सिखायेंगे? मुख्य धर्म हैं ही चार और धर्म शास्त्र भी चार हैं। अभी तो अनेक शास्त्र, अनेक चित्र हैं। अब बच्चों की बुद्धि में बैठा है कि ऊँचे ते ऊँचा है शिवबाबा, फिर थोड़ा नीचे आओ तो हैं ब्र०वि०शं०, फिर यहाँ साकार वतन में आओ तो पहले–2 ल०ना० और उनकी डिनायस्टी, फिर संगमयुग पर ब्रह्मा–सरस्वती, बस। और तो फालतू अनेक चित्र बना दिए हैं। तो परमानन्द की गीता चित्रों वाली यहाँ रखनी चाहिए। तो तुम उस पर समझा सको। दुर्गति वाली चीज़ की

कभी एडवरटाइज़मेंट की जाती है क्या? देखो, परमानन्द की गीता की कीमत रखी है 75 रुपया। कितने फालतू झूठ चित्र लगाए हैं। इसको कहा जाता गुड्डे–गुड्डियों की पूजा। गुड्डे–गुड्डियों का कोई ऑक्युपेशन थोड़े ही होता है। रुद्र यज्ञ जब रचते तो शिव का लिंग बनाय पूजा कर फिर डुबो देते। देवियों के भी चित्र बनाते, पूजा कर डुबो देते। तो गुड्डे–गुड्डियों की पूजा हो गई ना; क्योंकि उनके ऑक्युपेशन को नहीं जानते हैं। उसकी महिमा है पतित–पावन। तो कैसे पतित आत्माओं को पावन बनाते हैं यह नहीं जानते। बिल्कुल तुच्छ बुद्धि, बन्दर बुद्धि हैं। हम भी कल बन्दर–बंदरिया थे। अब मंदिर में निवास करने लायक बन रहे हैं। देखो, कहाँ की बात कहाँ ले गए हैं। कहते हैं राम ने बन्दर की सेना ली। रावण की तो मनुष्य की सेना दिखाते और राम की बंदर की सेना। अभी भला बंदर सेना क्यों नहीं निकाल लेते। बंदर तो महावीर है ना। हनुमान बंदर को महावीर कहते हैं। बंदर महावीर है तो युद्ध में बन्दरों को क्यों नहीं लड़ाते? मनुष्यों को क्यों लड़ाते हैं? समझते तो कुछ हैं नहीं। जैसे कुत्ता हड्डी चूसता है तो उसके ही मुख से खून निकलता है तो उसको बड़ा आनन्द आता है। समझता है मुझे कोई चीज़ मिल गई है। यह भी भक्ति करते, झाँझ बजाते, गीत गाते रहते हैं। बड़ा मज़ा आता है; परन्तु दुर्गति में जाते रहते हैं। तो इनको दलदल से निकालना चाहिए। (विद्युत) मण्डली में जाकर समझाओ। अभी तुमको जागना और जगाना है अर्थात बाप का परिचय देना है। यह निधनके बाप को नहीं जानते। सिर्फ कथा सुनाते और पैसा कमाते रहते हैं। इससे क्या हुआ! अभी मरना तो सबको ज़रूर है इस लड़ाई में। इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला धुकती (भड़कती) जाती है। लिखते हैं ना हमने इतने–2 बॉम्ब्स बनाए हैं। तो क्या कल्प पहले इन्होंने समुद्र में डाले थे। नहीं। विनाश तो हुआ था। तभी कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। कौन? कौरव और यादव। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। कौरव राज्य अर्थात् ..... राज्य अर्थात् .....राज्य। इस कहने में कोई हर्जा नहीं है; क्योंकि सच है ना। तो यह पोस्टर लाखों की अंदाज़ में छपाओ सभी लैगवेज़ में। इंगलिश में ज़रूर छपना चाहिए। जहाँ–2 गीता पाठशाला हो वहाँ–2 बाँटते जाओ। पोस्टर पर एड्रेस भी लगी हो। बाबा डायरैक्शन देते हैं, करना तो बच्चों का काम है। लिखा हुआ है शिवबाबा। तो शिवबाबा भी बाप तो ब्रह्मा भी बाप है। तो बच्चों को वर्सा शिवबाबा से मिलता है वा ब्रह्मा से? वर्सा शिवबाबा से मिलता है। जिससे ब्रह्मा को भी वर्सा मिलता है। बाबा ने बहुत समझाया है कि गीता, मैगज़ीन में पहले पेज पर यह बात लिखो तब कोई दूसरी बात। जो ब्राह्मण बनने वाले होंगे उनको झट ठका होगा। नहीं तो लिया और फेंक दिया। जैसे बंदर कोई किताब दो तो वह लेगा और फेंक देगा। समझेगा कुछ नहीं। तभी बाप कहते हैं यह ज्ञान भक्तों को, गीता पाठियों को देना। उनमें से भी जिसके भाग्य में होगा वह समझेंगे। सा(फ) लिखना चाहिए कि सन्यासी प्रवृत्तिमार्ग का शास्त्र गीता सुना नहीं सकते; क्योंकि निवृत्तिमार्ग वाले हैं; परन्तु पैसे लिए वह (सुनाते रहते)। यह भी है फिर अन्धश्रद्धालु। गांधी कहता था पतित–पावन सीता–राम और हाथ में उठाता था गीता। समझते तो कुछ है नहीं। ..... बन्दर हैं। सूरत है मनुष्य की, सीरत है बन्दर की। अब तुम्हारी सीरत देवताओं जैसी न रही है। यह तो है ही नर्क। यहाँ तो जो भी बच्चे आदि पैदा होते, बिच्छू–टिंडन मिसल (दुख) देते रहते हैं, एक/दो को काटते रहते हैं। बाकी वो कोई जो गरुड़ पुराण में नदी दिखाई है ..... है नहीं। यह दुनिया नर्क है। तो बच्चे जानते हैं आज नर्कवासी, संगमवासी हैं, कल स्वर्गवासी ..... हैं। इसलिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ